Self Respect

28-05-2014

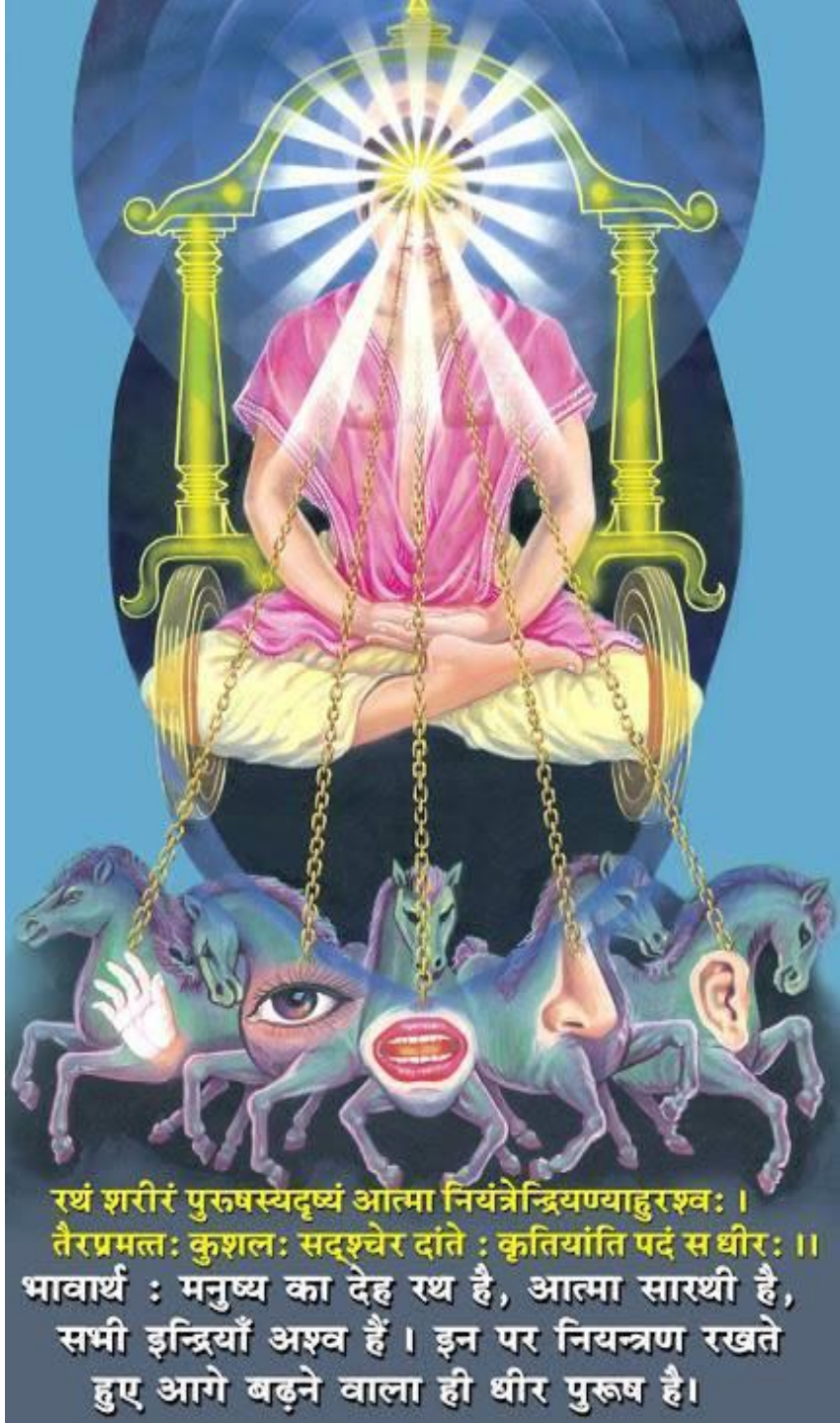

- ✓भगवानुवाच – स्वधर्म में बैठो | तुम्हारा बाप तुमको बैठ पढ़ाते हैं | बेहद का बाप बेहद की पढ़ाई पढ़ाते हैं क्योंकि बाप बेहद का सुख देने वाला है |

- ✓ बेहद का बाप आया है तुमको हीरे जैसा बनाने | हीरे जैसे देवी-देवता ही होते हैं |

- ✓ प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे तुम ब्राह्मण ठहरे | फिर तुमको देवता बनना है | ब्राह्मणों की होती है चोटी |

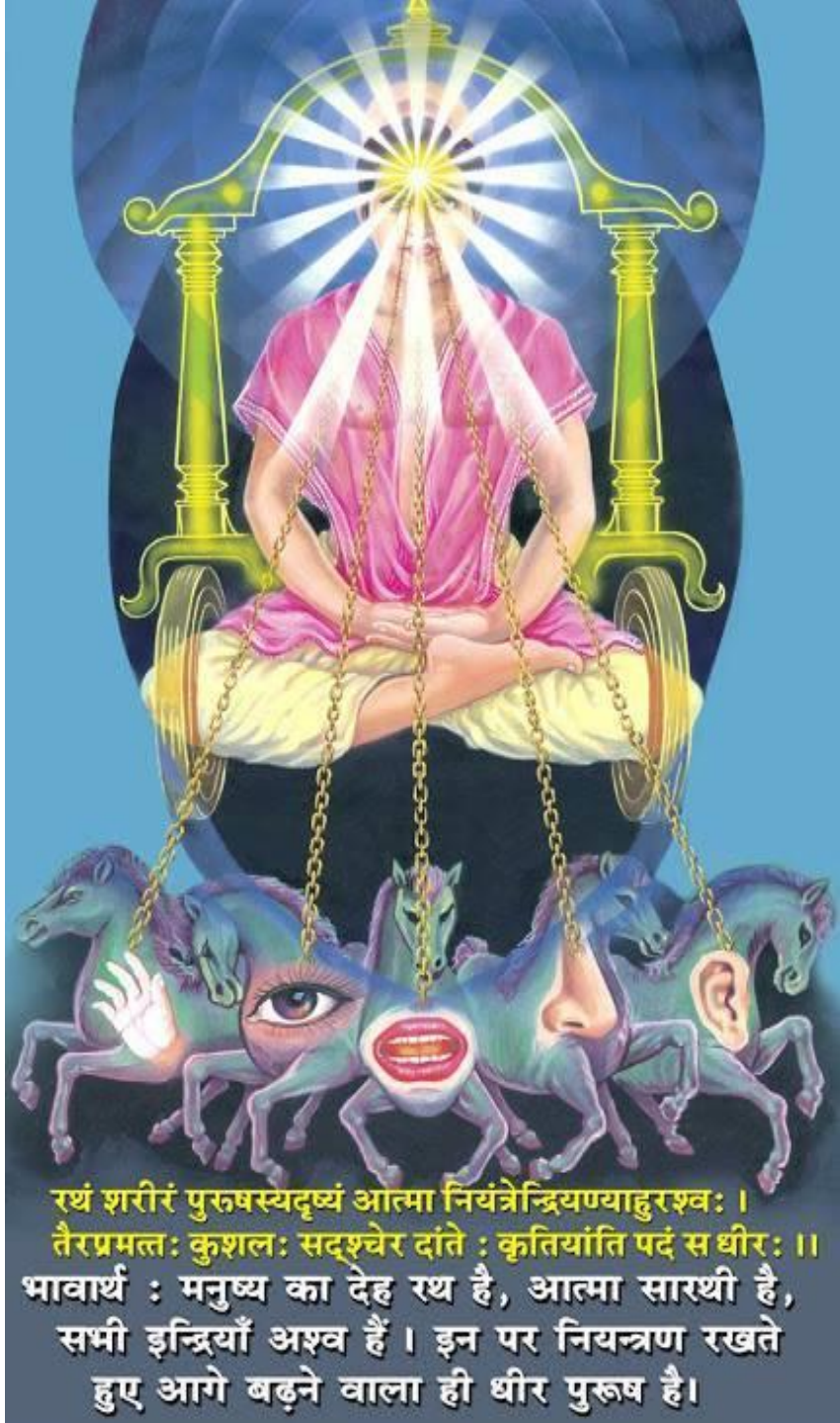

✓तुम प्रजापिता ब्रह्मा के मुख वंशावली हो, कुख वंशावली तो नहीं हो | कलियुगी सब हैं कुख वंशावली | साधू, सन्त, ऋषि, मुनि आदि सब द्वापर से लेकर कुख वंशावली बने हैं | अभी सिर्फ़ तुम प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ ही मुख वंशावली बने हो | यह तुम्हारा है सर्वोत्तम कुल, देवताओं से भी उत्तम क्योंकि तुमको पढ़ाने वाला, मनुष्य से देवता बनाने वाला बाप आया है | बच्चों को बैठ समझाते हैं क्योंकि भक्ति मार्ग वाले यहाँ आते ही नहीं हैं, यहाँ आते हैं ज्ञान मार्ग वाले | तुम आते हो बेहद के बाप से भक्ति का फल लेने | अब भक्ति का फल कौन लेंगे? जिसने सबसे जास्ती भक्ति की होगी, वही पत्थर से पारसबुद्धि बनते हैं |

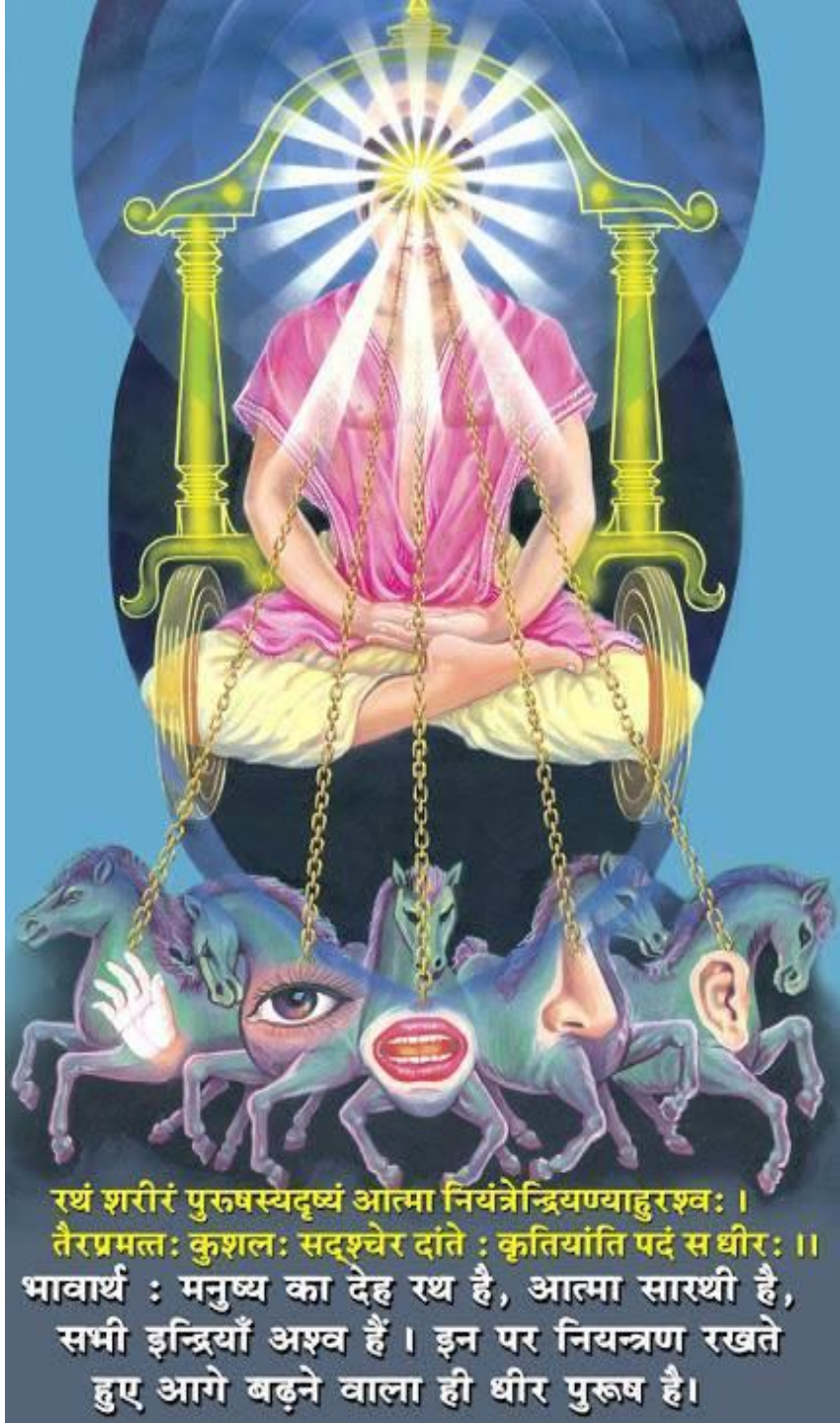

- ✓अभी तुम कलियुगी से सतयुगी, विकारी से निर्विकारी बनते हो अथवा पुरुषोत्तम बनते हो | तुम आये हो ऐसा लक्ष्मी-नारायण जैसा बनने के लिए | यह भगवान् भगवती हैं तो ज़रूर इन्हों को भगवान् ही पढ़ायेंगे |

- ✓ तुम यहाँ आये ही हो राजधानी के मालिक बनने लिए |

- ✓ जब सतयुग था तो तुम्हारी सद्गति थी | अभी तुम पुरुषोत्तम संगमयुग पर बैठे हो, बाकी और सब कलियुग में हैं | तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुग पर |

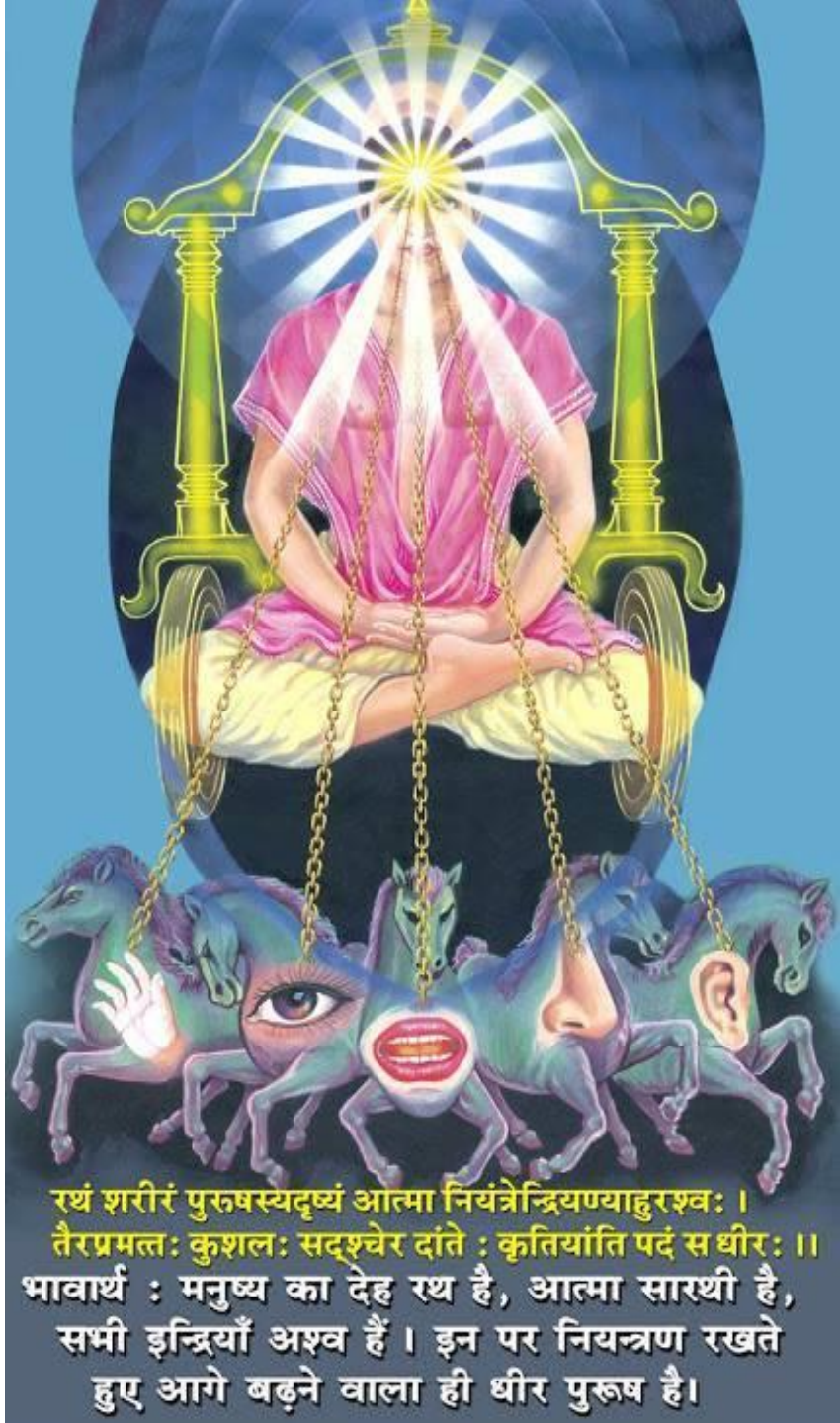

✓ब्रह्मा द्वारा स्थापना, सो तो अब हो रही है | तुम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो |

✓सतयुग में राय देने वाले कोई चाहिए नहीं | अभी जो तुमको राय अथवा श्रीमत मिलती है, वह अविनाशी बन जाती है | अभी देखो कितनी राय देने वाले हैं |

✓यह मत 21 जन्म चलती है | तुम्हारी सद्गति हो जाती है | वहाँ तो गुरु की भी दरकार नहीं रहती | सतयुग में न गुरु, न वज़ीर रहता है | अभी तुमको श्रीमत मिलती है अविनाशी 21 पीढ़ी के लिए, 21 बुढ़ापे के लिए | बूढ़ा बन फिर शरीर छोड़ जाए बच्चा बनेंगे |

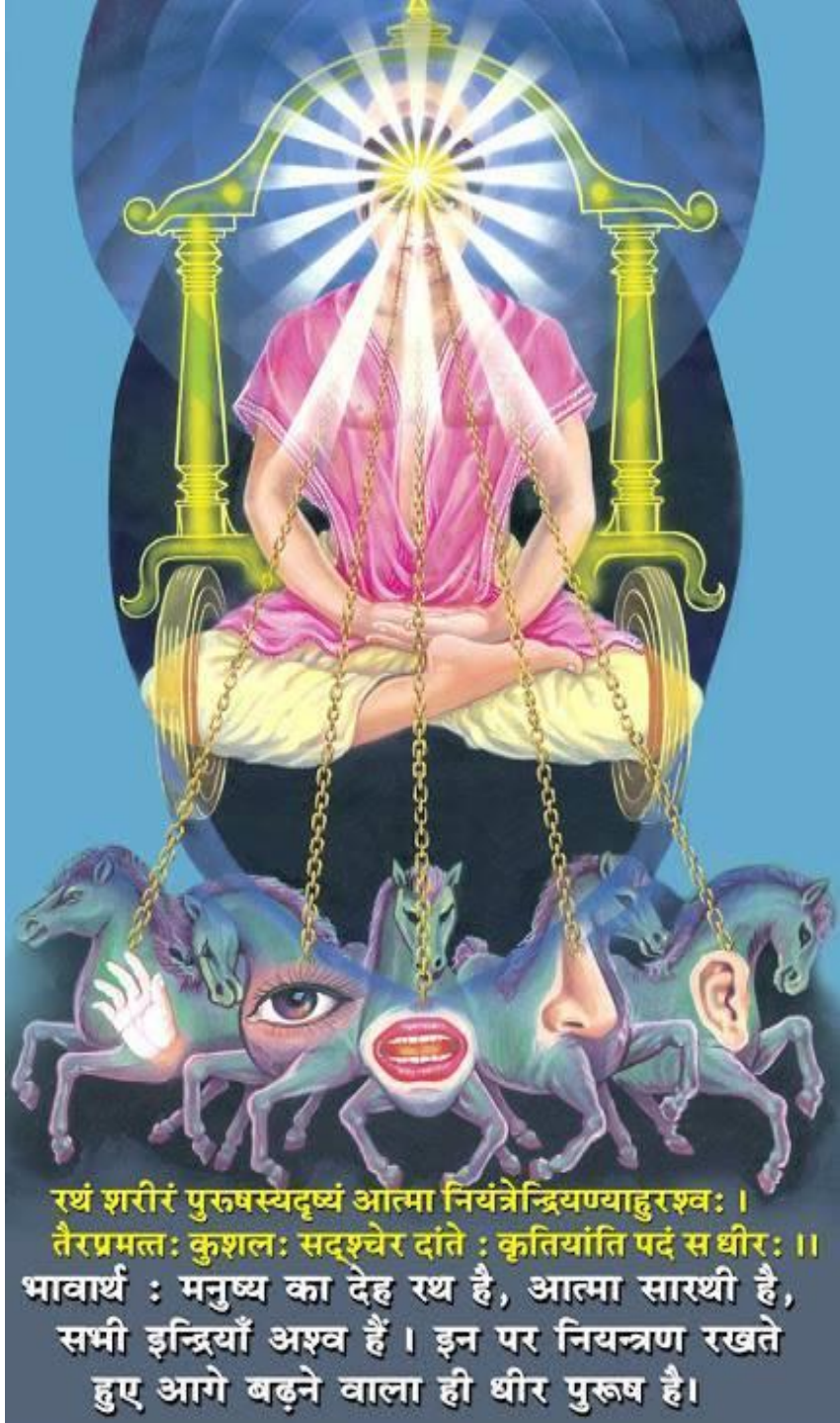

✓मनुष्यों में तो ज़रा भी अक्ल नहीं है क्योंकि पत्थरबुद्धि हैं | बाप समझाते हैं मीठे-मीठे बच्चों, तुम ब्राह्मण-ब्राह्मणियाँ हो |

✓तुम बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेते हो | हद के बाप से हद का वर्सा मिलता है | हद के वर्से में दुःख बहुत है इसलिए बाप को याद करते हैं |

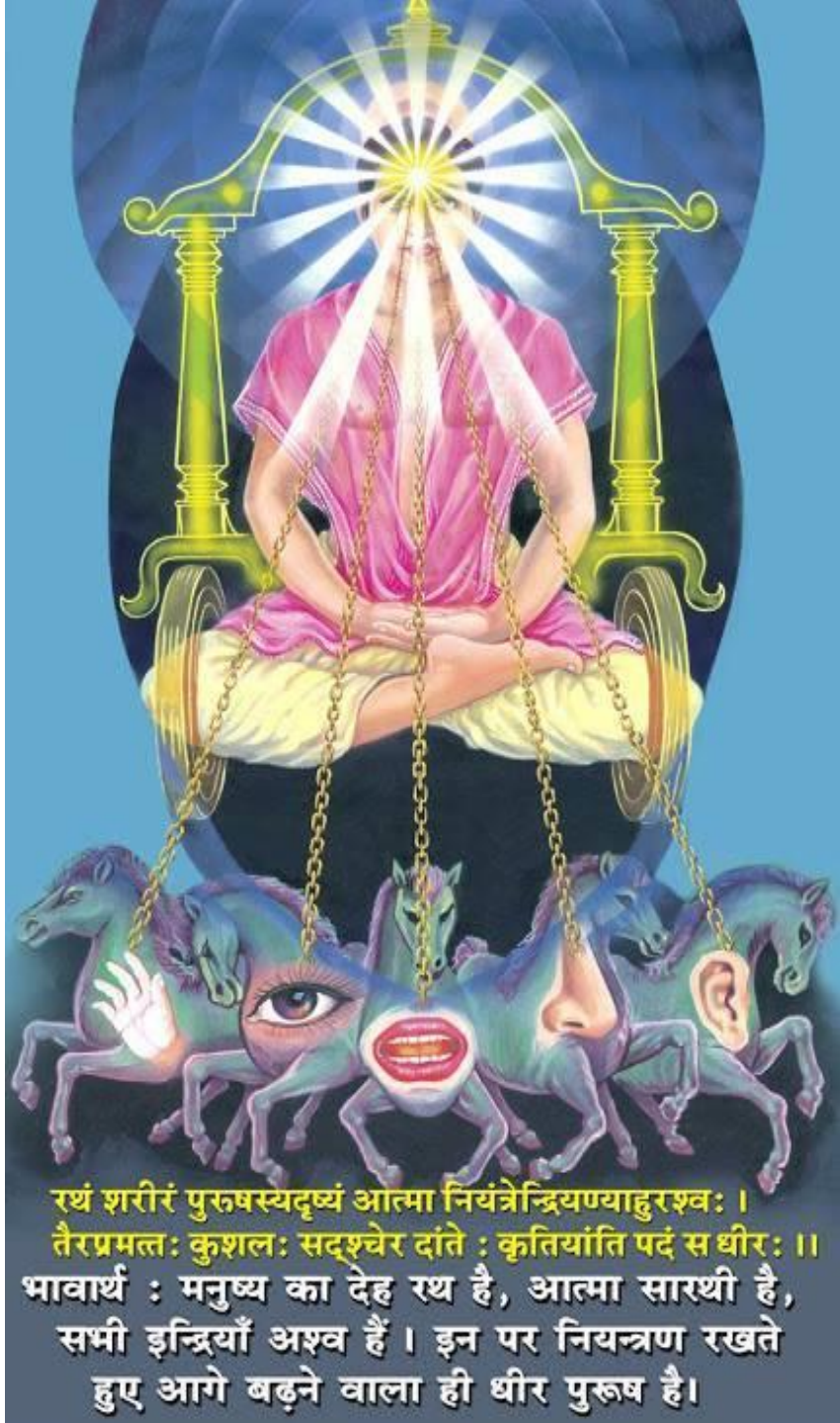

- ✓हे मीठे बच्चों, अगर इस जन्म में ब्राह्मण बनकर काम पर जीत पहनी तो जगत जीत बनेंगे | तुम पवित्रता धारण करते हो देवता बनने के लिए | तुम आये हो आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करने | यह है पुरुषोत्तम संगमयुग |
- ✓कल्प पहले जितने पावन बने थे, सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी घराने के, वह ज़रूर बनेंगे |
- ✓सतयुग में जब तुम सद्गति पाते हो तो बाकी सब शान्तिधाम में रहते हैं | इसको कहा जाता है सर्व की सद्गति |

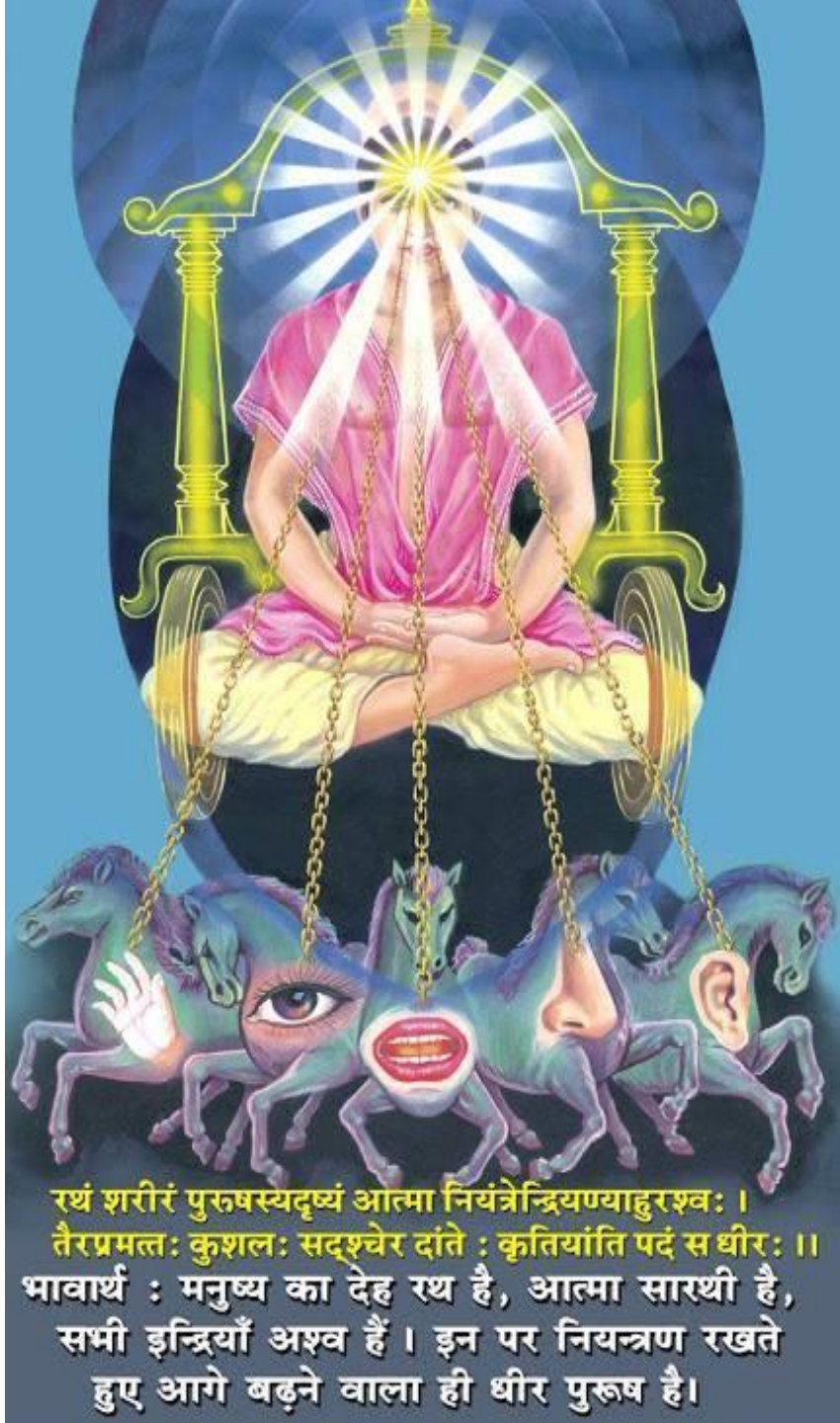

✓जब तुम स्वर्ग में रहते हो तो वहाँ हो सुखधाम में | पवित्रता सुख-शान्ति सब वहाँ है | वहाँ झगड़ा आदि होता नहीं | बाकी इतने सब शान्तिधाम में चले जाते हैं |

✓नाटक के मुख्य एक्टर्स कौन हैं? कोई बता नहीं सकेंगे | अभी तुम बच्चे जानते हो यह बेहद का ड्रामा कैसे जूँ मिसल चलता है | टिक-टिक होती रहती है |

✓ सतयुग में दूसरे कोई होते नहीं | बहुत थोड़े हैं | वह थोड़े जो होंगे उन्होंने सबसे जास्ती भक्ति की होगी |

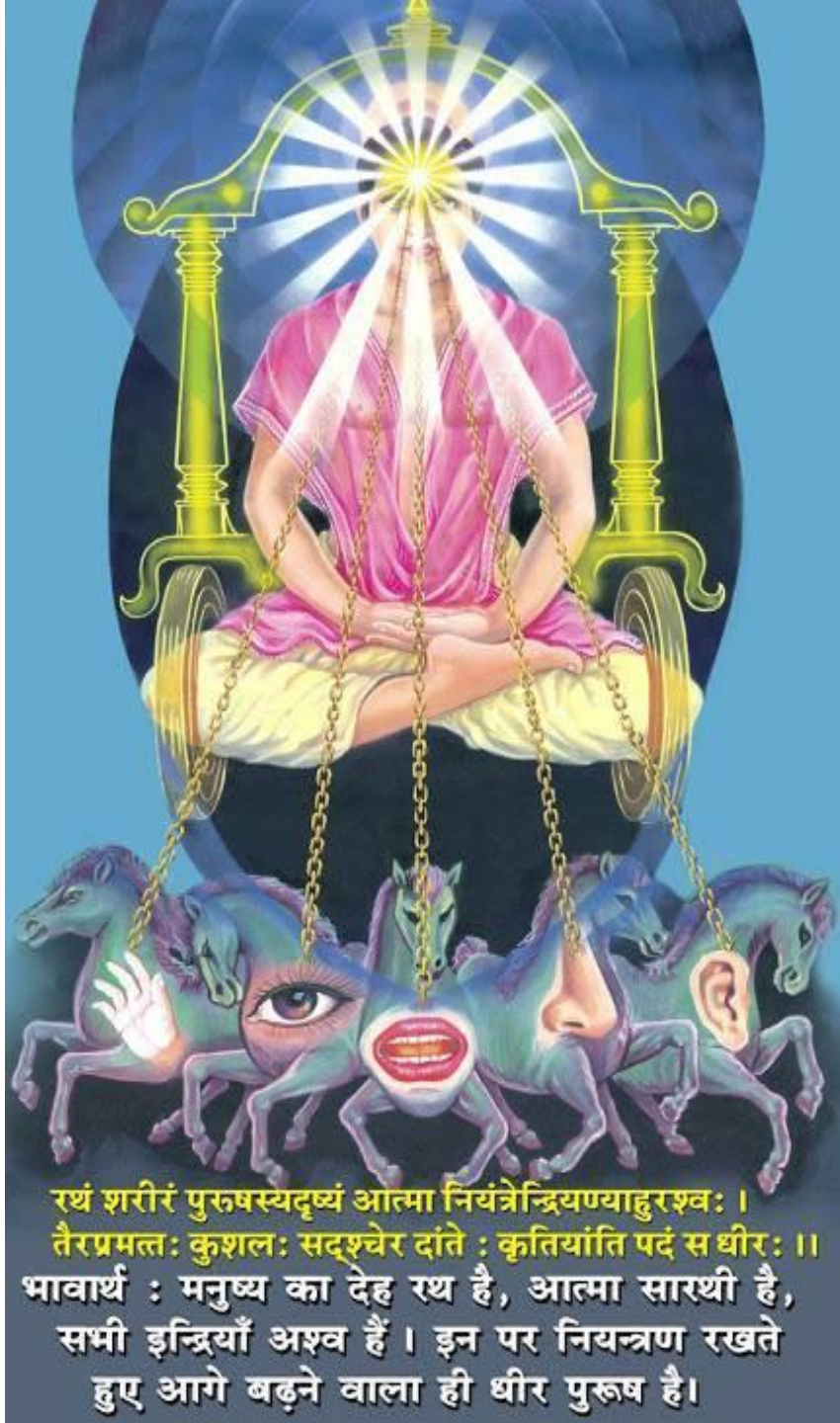

✓नशा रहे – मनुष्य से देवता बनाने वाला बाप अभी हमारे सम्मुख है, अभी है हमारा यह सर्वोत्तम ब्राह्मण कुल |

✓समय प्रमाण अपने भाग्य का सिमरण कर ख़ुशी और प्राप्तियों से भरपूर बनने वाले स्मृति स्वरूप भव

✓भक्ति में आप स्मृति स्वरूप आत्माओं के यादगार रूप में भक्त अभी तक आपके हर कर्म की विशेषता का सिमरण करते अलौकिक अनुभवों में खो जाते हैं तो आपने प्रैक्टिकल जीवन में कितने अनुभव प्राप्त किये होंगे!

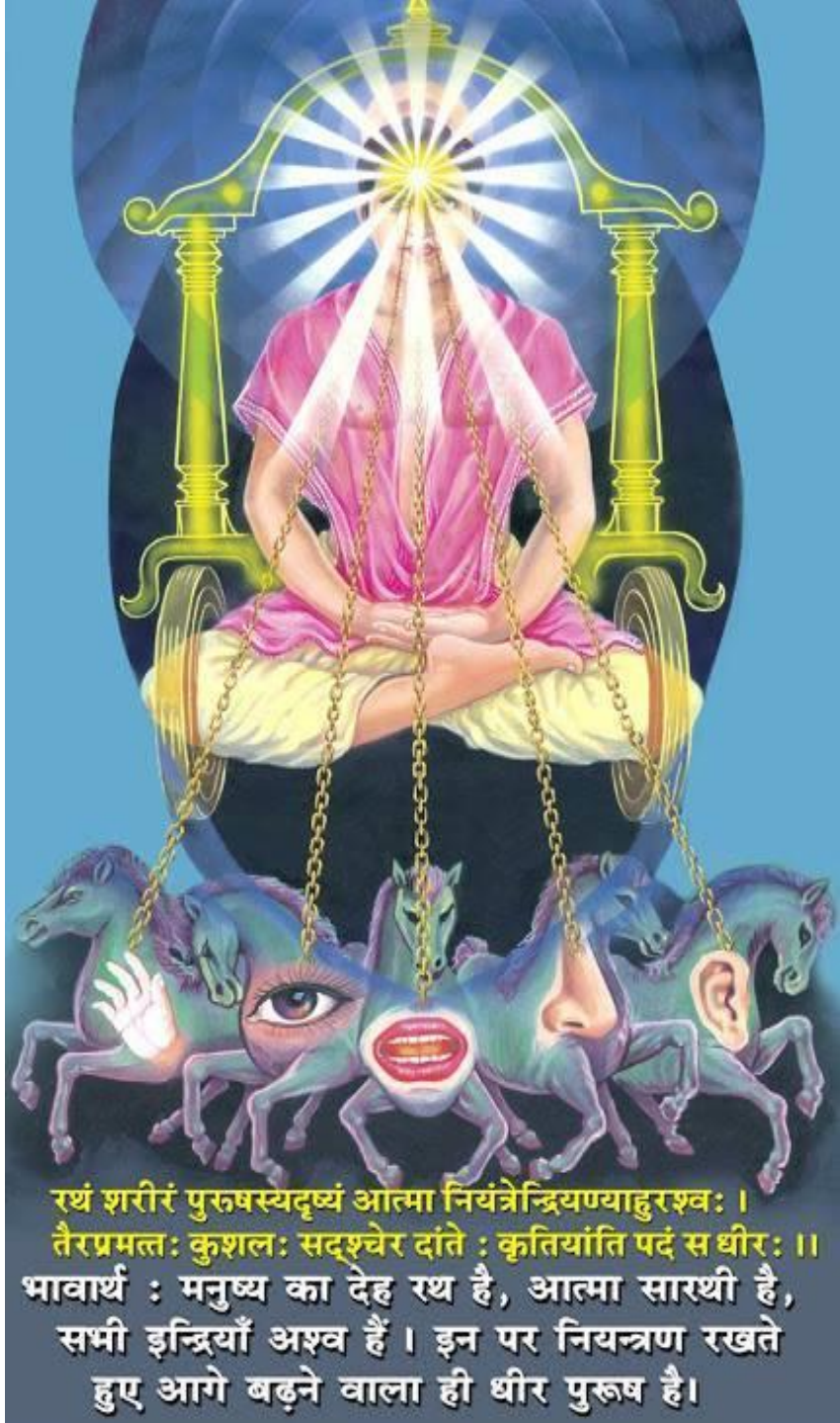

✓सिर्फ़ जैसा समय, जैसा कर्म वैसे स्वरूप की स्मृति इमर्ज रूप में अनुभव करो तो बहुत विचित्र ख़ुशी, विचित्र प्राप्तियों का भण्डार बन जाएंगे और दिल से यही अनहद गीत निकलेगा कि पाना था सो पा लिया |

अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग | रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते |